हिंदी और कॉकबरक की समकालीन काव्य संवेदना

(मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़सिंह की कविताओं के विशेष संदर्भ में)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय कोलकाता के

एम. फिल. हिंदी तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

सत्र

2014-2015

शोधार्थी

फ़ातिमा कनीज़

पंजी. सं.- 2014/02/205/031

ज्ञान शांति मैत्री

क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

क्षेत्रीय केंद्र, ऐकतान, आईए-290, सेक्टर-3, साल्ट लेक, कोलकाता-97, भारत

घोषणा-पत्र

मैं फ़ातिमा कनीज़ घोषणा करती हूँ कि मेरे लघु शोध का विषय 'हिंदी और कॉकबरक की समकालीन काव्य संवेदना (मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंह के कविताओं के विशेष संदर्भ में)' है। यह लघु शोध मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारित है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। यह शोध कार्य मैंने डॉ. कृपाशंकर चौबे, एसोसिएट प्रोफेसर/प्रभारी, कोलकाता केंद्र, के निर्देशन व मार्गदर्शन में पूरा किया है। मैं घोषणा करती हूँ कि इस लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के शोध संबंधित सभी नियमों का पालन किया है।

फ़ातिमा कनीज़

स्थान : कोलकाता

एम.फिल. तुलनात्मक साहित्य

दिनांक :

पंजी.सं.2014/02/205/031

आभार

एक निश्चित अवधि में प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करना मेरे लिए कदाचित् संभव न होता यदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ लोगों का सहयोग न मिला होता। इनके प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना तो संभव नहीं है, फिर भी.....

सबसे पहले मैं महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कोलकाता के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिसने मुझे शोध कार्य का सुअवसर और एक सुव्यवस्थित शैक्षणिक परिवेश प्रदान किया जिससे मेरा शोध कार्य संपन्न हो पाया।

मैं, अपने शोध निर्देशक, डॉ. कृपाशंकर चौबे, एसोसिएट प्रोफेसर/प्रभारी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने न केवल विषय चयन एवं शोध प्रबंध लेखन के दौरान पग-पग पर मुझे स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान किया, बल्कि इस कार्य को पूर्ण करने में वांछित स्वतंत्रता भी प्रदान की, जिससे यह शोध कार्य पूर्णता को प्राप्त कर पाया।

मैं, प्रो. चंद्रकला पाण्डेय के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने शोध-कार्य के दौरान मेरा उत्साहवर्धन एवं स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन कर प्रकारांतर से मुझे संबल प्रदान किया।

साथ ही एसिस्टेंट प्रो. अमित राय के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर शोध-कार्य के दौरान मेरा यथोचित उत्साहवर्धन किया।

त्रिपुरा विश्वविद्यालय के एसिस्टेंट प्रो. जय कौशल के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मेरे शोध-कार्य में मेरी सहायता की।

मैं अपने मित्रों एवं सहपाठियों के आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिनके सहयोग ने शोध कार्य को पूर्णता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

.....

फ़ातिमा कनीज़

स्थान : कोलकाता

दिनांक :

विषयानुक्रमणिका

घोषणा पत्र

प्रमाण पत्र

आभार

भूमिका

प्रथम अध्याय: 1-13

हिंदी और कॉकबरक भाषाओं का तुलनात्मक परिचय

द्वितीय अध्याय: 14-39

हिंदी की समकालीन काव्य संवेदना और मंगलेश डबराल

तृतीय अध्याय: 40- 62

कॉकबरक की समकालीन काव्य संवेदना और चंद्रकांत मुड़ासिंह

चतुर्थ अध्याय: 63-119

मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंह की कविताओं का तुलनात्मक अंतर्वस्तु विश्लेषण

4.1 स्त्री

4.2 समाज

4.3 प्रकृति

4.4 जीवन-दर्शन

4.5 छोटी कविता और समान शीर्षक

4.6 विविध

उपसंहार **120 -121**

सहायक ग्रंथ सूची: **122 -123**

भूमिका

हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है जो समूचे विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। अलग-अलग संस्कृति और भाषाएं होते हुए भी हम सभी एक सूत्र में बंधे हुए हैं तथा राष्ट्र की एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण बनाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

आम तौर पर मनुष्य विदेशी भाषाओं के प्रति अति आग्रह रखता है। विदेशों में बहुत कुछ लिखा जा रहा है ऐसी लोगों की अवधारणा है। हमारे ही देश में बहुत कुछ लिखा जा रहा है लेकिन इस दृष्टि में लोगों की जिज्ञासा कम है। हिंदी भाषा, दूसरी भाषा- भारत में अनेक भाषाएं और बोलियां हैं जिनका अपना समृद्ध साहित्य है और जिनके बारे में जानने की इच्छा कम पायी जाती है इसलिए हिंदी और अन्य भाषाओं का संबंध अविच्छिन्न सा रहता है। इन अपरिचित भाषाओं के बीच दरारें पड़ी हैं, तुलनात्मक साहित्य इन दरारों को भरने की चेष्टा है।

मेरे लघु शोध-प्रबंध का विषय है- "हिंदी और कॉकबरक की समकालीन काव्य संवेदना (मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंहकी कविताओं के संदर्भ में)। ये दोनों भाषाएं अलग-अलग परिवार की हैं। हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है जबकि कॉकबरक पूर्वोत्तर के एक प्रमुख राज्य 'त्रिपुरा' की आदिवासी जनजातियों की भाषा है। हिंदी प्राचीन भाषा है जबकि साहित्य में कॉकबरक नवीन भाषा है। इस भाषा का साहित्य अधिक समृद्ध न होने के कारण लोगों की दृष्टि से ओझल है। इनमें परिचय के दायरे ऐसे हैं कि कभी-कभी संकेतों से बातें करनी पड़ती हैं, तुलनात्मक साहित्य इन संकेतों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंह दोनों अलग क्षेत्रों और भाषाओं के कवि है, फिर भी समकालीन कवि होने के नाते इनकी कविताओं में क्या साम्य और वैषम्य है, मेरे इस लघु शोध पत्र द्वारा जानने में मदद मिल सकती है।

पहला अध्याय है, 'हिंदी और कॉकबरक भाषाओं का तुलनात्मक परिचय'। इसमें हिंदी के उद्भव और विकास के साथ-साथ कॉकबरक भाषा की अवहेलना, अवरुद्ध होने के कारण तदुपरांत धीरे-धीरे उसके साहित्यिक भाषा बनने की स्थिति को उजागर किया गया है।

दूसरा अध्याय 'हिंदी की समकालीन काव्य संवेदना और मंगलेश डबराल' है जिसमें समकालीन कवि मंगलेश डबराल की कविताओं की व्याख्या करते हुए समकालीन कवियों में उनकी अपनी पहचान का वर्णन किया गया है।

तीसरा अध्याय है, 'कॉकबरक की समकालीन काव्य संवेदना और चंद्रकांत मुड़ासिंह' है, जिसमें कॉकबरक के समकालीन कवियों में चंद्रकांत मुड़ासिंहकी कविताओं का विवेचन करते हुए हिंदी के समकालीन कवि मंगलेश डबराल से उनकी भिन्नता और समानता का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय है, 'मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंहकी कविताओं का तुलनात्मक अंतर्वस्तु विश्लेषण'। यह छः उप अध्यायों में विभक्त हैं। इनमें से पहला उप अध्याय है, 'स्त्री' जिसमें मंगलेश डबराल की कविताओं में स्त्री किस रूप में चित्रित की गयी है और चंद्रकांतमुड़ासिंहकी कविताओं में किस रूप में, इसका वर्णन किया गया है। दूसरा उप अध्याय है 'समाज' भारतीय समाज और पूर्वोत्तर के समाज का ज़िक्र किया गया है। तीसरा उप अध्याय 'प्रकृति' है, इसमें दोनों कवियों ने अपनी कविताओं में प्रकृति का वर्णन किस रूप में किया है, का चित्रण किया गया है। चतुर्थ उप अध्याय 'जीवन दर्शन' है, दोनों कवियों का परिवेश भिन्न होने के कारण चीज़ों को देखने का नज़रिया कैसे अलग हो जाता है, इसका वर्णन किया गया है। पंचम उपअध्याय है, 'छोटी कविताएं और एक समान शीर्षक' जिसमें दोनों कवियों की सूक्ष्म दृष्टि तथा समान विषयों पर चर्चा की गयी है। अंतिम उप अध्याय 'विविध' है, जिसमें दोनों कवियों की कविताओं में व्यक्त वैषम्यता का वर्णन किया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध में समकालीन हिंदी और कॉकबरक के कवि मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंह की काव्य संवेदना की तुलना करने की मैंने कोशिश की है।

प्रथम अध्याय

हिंदी और कॉकबरक भाषाओं का तुलनात्मक परिचय

द्वितीय अध्याय

हिंदी की समकालीन काव्य संवेदना और मंगलेश डबराल

तृतीय अध्याय

कॉकबरक की समकालीन काव्य संवेदना और चंद्रकांत मुड़ासिंह

चतुर्थ अध्याय

मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंह की कविताओं का तुलनात्मक अंतर्वस्तु विश्लेषण

4.1 मंगलेश डबराल की कविताओं में स्त्री

4.2 चंद्रकांत मुड़ासिंह की कविताओं में स्त्री

4.3 मंगलेश डबराल की कविताओं में समाज

4.4 चंद्रकांत मुड़ासिंह की कविताओं में समाज

4.5 मंगलेश डबराल की कविताओं में प्रकृति

4.6 चंद्रकांत मुड़ासिंह की कविताओं में प्रकृति

4.7 मंगलेश डबराल की कविताओं में जीवन दर्शन

4.8 चंद्रकांत मुड़ासिंह की कविताओं में जीवन दर्शन

4.9 मंगलेश डबराल और चंद्रकांत मुड़ासिंह की छोटी कविताएं और एक समान शीर्षक

4.10 विविध